आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत
जीविकोपार्जन हेतु कीट जनित उत्पादों का महत्व विषय पर प्रशिक्षण
दिनांक : 20.05.2022
वन उत्पादकता संस्थान, रांची
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी के सक्रिय पहल पर भारत सरकार का महत्वकांक्षीयोजना आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 20.05.2022 को चंदवा में "जीविकोपार्जन हेतु कीट जनित उत्पादों का महत्व" विषय पर अलौदिया पंचायत की मुखिया श्रीमती फुलजेंसिया टोप्पो की अध्यक्षता में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे चंदवा के आसपास के विभिन्न गावों के लगभग 55 लाभार्तियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का परिचय देते हुए संस्थान के श्री बी.डी.पंडित, तकनीकी अधिकारी ने संस्थान की गतिविधियों को बताया एवं लाभदायी कीट के महत्व को समझाते हुए उनके उत्पादों का परिचय दिया।

अध्यक्ष श्रीमती फुलजेंसिया टोप्पो ने ग्रामीणों से प्रशिक्षण का अधिकाधिक लाभ लेने का आग्रह करते हुए वन-वर्धन की बात कही।

समाजसेवी श्री रामयश पाठक नें वनों के महत्व को समझाया एवं संस्थान द्वारा समय-समय पर आयोजित इस तरह के जागरुकता कार्यक्रम की सराहना की।

श्री सुभाष चंद्र वैज्ञानिक-डी ने मधुमक्खी पालन के विभिन्न प्रक्रियाओं को समझाते हुए उससे होने वाले आय-व्यय का व्योरा बताया। मधुमक्खियों की प्रजाति, भारतीय एवं अन्य प्रजातियों की चर्चा करते हुए व्यावसायिक दृष्टि से दो प्रजाति (मेलिफेरा एवं एण्डिका) को महत्वपूर्ण एवं लाभदायक बताया। मधुमक्खी बक्सा, रानी मधुमक्खी, वर्कर मधुमक्खी की पहचान एवं उनके कार्यों को बताया। श्री धवल कुजूर, श्री पूरण प्रजापति आदि के सवालों का जवाब देते हुए मधुमक्खी पालन के लिए प्रेरित भी किया।

उप-वन संरक्षक श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की ने उपस्थित प्रतिभागियों का परिचय प्राप्त करते हुए उनके कार्य एवं रुचि से अवगत होते हुए अपना परिचय दिया एवं स्थानीय होने के नाते इस परिवेश में कीट जनित उत्पादों की अपार सम्भावनाओं से अवगत कराया। कीट के बिना मानव जीवन असंभव बताते हुए वन-वर्धन में भी कीटों के महत्व को समझाया। तसर कीट, मलबरकीट आदि का जीवन परिचय देते हुए पोषक वृक्षों की चर्चा की एवं तसर तथा मलबरी कीट पालन, रेशम प्राप्त करने, बुनाई आदि के तरीकों को भी बताया। मलबरी तसर को महंगा बताते हुए इस क्षेत्र में उसकी अपार संभावना बताया। अर्जुन, आसन आदि के पौधे तैयार कर वृक्षारोपण एवं कीट पालन में रोजगार सृजन का साधन बताया एवं लोगों को तसर कीट पालन के लिए प्रोत्साहित भी किया।

श्री एस.एन.वैद्य, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने कीट का पर्यावरण संरक्षण में महत्व को बताया एवं फ्लेमेंजिया पर लाह कीट पालन कर आय-वर्धन की अपील की।

श्री सूरज कुमार, वरिष्ठ तकनकी सहायक ने भी पर्यावरण संरक्षण में कीट के महत्वों को बताया एवं कहा की कीट पर्यावरण के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

समापन से पूर्व श्री बी.डी.पंडित ने संस्थान द्वारा वन-वर्धन को बढ़ावा देने के लिए लाह, तसर एवं मधुमक्खी पालन को आवश्यक बताया। उन्होने बताया कि धरती पर कीटों की आबादी सबसे अधिक है। यदि कीटों का ह्रास होता है तो मानव जीवन खतरे में पड़ जायेगा। अंत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए रुचि अनुसार किसानों किसानों की एक सूची प्राप्त किया। लगभग 30 किसानों ने मधुमक्खी एवं 12 किसानों ने लाह खेती करने की इच्छा जाहिर की।

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

कीट जनित उत्पादों को लेकर दिया गया प्रशिक्षण

चंदवा. वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक डॉ नितिन कुलकर्णी की पहल पर शुक्रवार को स्थानीय मेनो नाइट मिशन परिसर में आजादी के अमृत महोत्सव के मौके पर जीविकोपार्जन के लिए कीट जनित उत्पादों के महत्व पर एकदिवसीय प्रशिक्षण शिविर लगाया गया. शिविर में रांची से आयी अंजना सुचिता तिर्की मौजूद थी. उन्होंने कीटों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लाभकारी कीट व हानिकारक कीट पर विस्तार से जानकारी दी. लाभकारी रेशम कीट के उत्पादन व जीविकोपार्जन की जानकारी दी. अर्जुन, शहतूत, बैर जैसे पेड़ों पर रेशम कीट पालन की विधि बतायी. भारतीय वन सेवा के वैज्ञानिक सुभाष चंद्र ने उपस्थित किसानों को हानिकारक कीट व लाभकारी कीट के तहत मधुमक्खी पालन के विभिन्न तरीकों को बताते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डाला. उन्होंने बताया कि मधुमक्खियों का मानव जीवन पर बड़ा एहसान है. यदि मधुमक्खियां समाप्त हो जाये, तो पृथ्वी पर मानव का रहना मुश्किल हो जायेगा. केंचुआ खाद के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी. कीटनाशक दवाओं के अंधाधुंध प्रयोग व उससे होनेवाले दुष्प्रभावों की जानकारी दी. सब्जियों व फसलों में कीटनाशक का प्रयोग को हानिकारक बताया. खेतों की उर्वरा शक्ति पर भी गहरा प्रभाव संबंधी जानकारी दी. इसके अनावश्यक प्रयोग से बचने की सलाह दी. बताया कि विभिन्न प्रकार के कीटों के लिए विभिन्न प्रकार की दवाइयां उपलब्ध हैं. दुकानदार सभी कीटों के लिए एक ही प्रकार की दवाइयां लोगों को दे देते हैं. इसका दुष्प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है. शिविर को मुख्य तकनीकी अधिकारी एसएन वैद्य ने भी संबोधित किया. धन्यवाद ज्ञापन बीडी पंडित ने किया. मौके पर रामयश पाठक, नवनिर्वाचित मुखिया फुलजेंसिया टोप्पो समेत कई किसान मौजूद थे.

प्रभात खबर **21.05.2022**

किसानों को दी गई लाभकारी कीटों की जानकारी

संवाद सूत्र, चंदवा (लातेहार) : वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी की पहल पर भारत सरकार के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम आजादी का अमृत महोत्सव को लेकर जीविकोपार्जन हेतु कीटजनित उत्पादों के महत्व पर चंदवा में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मौके पर मौजूद तकनीकी पदाधिकारी विष्णुदेव पंडित ने कहा कि कुछ कीटों को छोड़कर अन्य पर्यावरण और मानव के साथ सभी जीवों के लिए लाभकारी होते हैं। इनका संरक्षण कर आर्थिक समृद्धि प्राप्त की जा सकती है। जरूरत है लाभकारी कीटों के पहचान और उसके संरक्षण की। कार्यक्रम में शिरकत कर रही अंजना सुचिता तिर्की ने जीविकोपार्जन हेतु कीट जनित उत्पादों के महत्व पर

लोगों को कीट पालन की जानकारी देती अंजना सुचिता तिर्की • जागरण

प्रशिक्षण देते हुए कहा कि मानव सिर्फ दो प्रतिशत हानिकारक कीटो को मार पाने में सक्षम होता है। 98 प्रतिशत कीट तो स्वतः नष्ट हो जाते हैं। कहा कि लाभकारी कीटों का पालन कर खुद के साथ देश को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। सुभाष चंद्रा ने प्रशिक्षण के दौरान बताया कि सिल्क, मधुमक्खी, लाख जैसे लाभकारी कीटों का पालन कर आमदनी का जरिया बढ़ाया जा सकता है। एसएन वैद्य, आदि ने भी लाभकारी कीटों समेत विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिया। सूरज कुमार ने पर्यावरण संरक्षण में कीटों की महता बताई। बताया गया कि यदि कीट परागण नहीं करेंगे तो खाद्यान की प्राप्ति नहीं होगी। पूरी दुनिया में वेस्टेज पड़ा रहेगा। रहने की जगह तक नही बचेगी। यहां मौजूद कीट ही मानव समेत संपूर्ण जीवों और पेड़-पौधों के लिए रहने के लिए जगह, खाने के लिए भोजन समत अन्य व्यवस्था कर पाते हैं। प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि अर्जुना, सहतूत, बैर आदि पेड़ों को उगाकर उनपर लाभकारी कीटों का पालन किया जा सकता है। प्रशिक्षण के दौरान मधुमक्खी पालन, लाख कीट पालन, सिल्क कीट पालन आदि के लिए जनप्रतिनिधियों और वहां मौजूद किसानों तथा ग्रामीणों को प्रेरित किया गया। वन भूमि को बचाने और उसके संरक्षण के लिए भी लोगों को जागरूक किया गया। मौके पर अलौदिया पंचायत की नवनिर्वाचित मुखिया फुलजेन्सिया टोप्पो, रामयश पाठक, मंजय उरांव आदि थे।

दैनिक जागरण, 21.05.2022